सेठ मुंगतूराम जी जैपुरिया

सेठ मुंगतूराम जैपुरिया की पुण्यस्मृती में

उनके सुपुत्र डॉ. राजाराम जैपुरिया के सौजन्य से

चित्रकूट माँ मंदाकिनी के सुरम्य तट पर पौराणिक विंध्याचल की हरी-भरी गोद में, नन्ही सी आबादी के रूप में बसा है । वनवासी राम की यह कर्मभूमि रही है । इस कारण चित्रकूट असंख्य भक्तजनों का अनोखा तीर्थ बना है ।

माता-पिता के सर्वाधिक प्रिय कुलभूषण सुपुत्र, बंधु-बांधवों तथा दीन-दुखियों के प्राणप्रिय सखा, सीता के स्नेहशील व कर्तव्यनिष्ठ पति, साहस एवं पराक्रम के अद्वितीय योद्धा, मनमोहक व्यक्तित्व के अनुपम प्रतीक, सर्वसाधारण जनों के सर्वप्रिय व सफलतम शासक तथा विश्ववंद्य मर्यादा पुरूषोत्तम राम स्वयं के कर्तव्य से मानव मात्र के लिए आदर्श बने हुए है । अनेक युग बीत जाने पर भी प्रभु राम के प्रति जनमानस में जमी हुई श्रद्धा पूर्ववत् ताजगी लिए विद्यमान है । यही है अपने देश की श्रेष्ठतम धरोहर ।

ऐसे ही मानव जीवन के विश्वव्यापी प्रतीक मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम का दर्शन कीजिए और उनके जीवन से प्रेरणा पाकर अपने जीवन को सार्थक बनाइये। इस भाव को लेकर दीनदयाल शोध संस्थान ने पद्मभूषण सेठ मुंगतूराम जी जैपुरिया की पुण्य स्मृति में उनके सुपुत्र डॉ. राजाराम जैपुरिया के सौजन्य से रामदर्शन का निर्माण कराया गया, जिसमें तीन प्रकार की कलाकृतियों - डायोरामा, पेन्टिंग, रिलीफ के माध्यम से श्रीराम के जीवन चरित्र का प्रदर्शन किया गया है ।

विश्वविख्यात विद्वान पं. राम शेवालकर प्रकल्प के मार्गदर्शक है । अर्बन सिस्टम के सुप्रसिद्ध वास्तुकला विशेषज्ञ श्री पुनीत एवं श्रीमती किरण सोहेल वास्तुकार है । कला शिरोमणि श्री सुहास बहुलकर एवं उनके सहयोगी शिल्पकार अशोक सोनकुसरे तथा अन्य कलाकार विभिन्न कलाकृतियों के निर्माता है ।

- नाना देशमुख

तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जी के साथ डॉ. राजाराम जैपुरिया रामदर्शन कराते हुए..